SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon
VKSU, Ara

FACTORS INFLUENCING SOCIALIZATION

समाजीकरण एक अर्जित प्रक्रिया है, जिसे एक बालक उम्र बढ़ने के साथ ही साथ अन्य लोगों के साथ अन्तर्क्रिया (Interaction) होने से सीख लेता है। जन्म के समय कोई बच्चा न तो सामाजिक होता है और नहीं तो पूर्णतः असामाजिक ही होता है। वस्तुतः वह "A social (निःसामाजिक) होता है, इसका मतलब यह हुआ कि उस बच्चे ~~सामाजिक बनने के~~ में वैसे गुण मौजूद रहते हैं जिससे आगे चलकर वह सामाजिक बन सकते हैं। यह एक अकाट्य सत्य है कि उम्र बढ़ने के साथ ही साथ बच्चों का सामाजिक दायरा भी बढ़ता जाता है। वह अन्य लोगों के सम्पर्क में आता है, इस तरह से Social interaction के द्वारा वह धीरे-धीरे सामाजिक मूल्यों, आदर्शों एवं प्रथाओं तथा नियमों को सीख लेता है।

समाजीकरण की यह प्रक्रिया आगे भी जारी रहती है। इस संदर्भ में किये गए अध्ययनों से ज्ञात होता है कि समाजीकरण पर कुछ खास तत्वों या कारकों का प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि अलग-अलग समाज के सदस्यों के समाजीकरण में भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इतना ही नहीं एक ही समाज के भिन्न-भिन्न लोगों के समाजीकरण एवं सामाजिक व्यवहारों में भी इन्हीं तत्वों के प्रभावों के कारण अन्तर पाया जाता है। अब प्रश्न उठता है, कि समाजीकरण को प्रभावित करने वाले ऐसे कारण कौन से हैं? इस संदर्भ में किये गये अध्ययनों से ज्ञात होता है कि इस प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक मूलतः दो प्रकार के होते हैं :- (A) जैविक कारक (B) सामाजिक अथवा वातावरणीय कारक।

④ जैविक कारक :- जैविक कारकों से तात्पर्य कुछ ऐसे तत्वों से है जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से समाजीकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इनके चलते व्यक्ति की आंगिक विकास या स्वास्थ्य एवं बौद्धिक विकास अवरुद्ध हो जाती है और वह Socialization में पीछड़ जाता है। ऐसे कारक निम्नलिखित हैं :—

(1) शारीरिक बनावट :- शारीरिक बनावट और समाजीकरण में गहरा सम्बन्ध है। अगर किसी बच्चे की शारीरिक बनावट में कोई त्रुटि या दोष रहता है तो उसका Socialization बाधित हो जाता है। आंगिक दोष से ग्रस्त बच्चों में हीन भावना का विकास हो जाता है। फलतः वे समाज के बच्चों से कटे-कटे रहते हैं, बच्चे उन्हें चिढ़ाते हैं अथवा तंग करते हैं। इन हालातों में भाषादोष, आंगिक दोष आदि से ग्रस्त बच्चों का समाजीकरण में बाधा उत्पन्न होती है और वे पीछड़ जाते हैं। उन्हें समायोजन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

दूसरी तरफ वैसे बच्चे जिनका शारीरिक गठन एवं विकास संतुलित होता है वे सामाजिक क्रियाकलापों में बढ़चढ़कर भाग लेते हैं और उनका समाजीकरण बढ़िया ढंग से हो जाता है।

(2) स्वास्थ्य (Health) :- स्वस्थ बच्चों का समाजीकरण उचित ढंग से हो पाता है। प्रायः यह देखा जाता है कि कुछ बच्चे जन्म से ही unhealthy होते हैं। वे अक्सर बीमार रहते हैं। कुछ बच्चे बड़े होते पर किसी संक्रामक संक्रमण के प्रभाव में आ जाते हैं तो कुछ बच्चे दुर्घटना आदि के शिकार होकर अपना स्वास्थ्य खो देते हैं। उन बच्चों का Socialization बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। दूसरी तरफ कुछ बच्चे पूर्णतः Healthy होते हैं। ऐसे बच्चे अक्सर प्रसन्न रहते हैं। सामाजिक गतिविधियों में बढ़चढ़कर भाग लेते हैं। उनका Socialization बड़ा ही Properly हो जाता है। उन्हें अवसर अधिक मिलता है तथा Social interaction के उचित अवसर भी मिलता है। दूसरी तरफ अस्वस्थ बच्चे पराश्रयी, जिद्दी एवं चिड़चिड़े होते हैं। समाज से दूर रहते हैं। फलतः Socialization में पीछड़ जाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समाजीकरण के जैविक कारकों पर भी किसी न किसी रूप में परिस्थितिजन्य बातें भी आंशिकतः अपना प्रभाव डालती ही हैं।

(2) वातावरणीय या सामाजिक कारक :- समाजीकरण को प्रभावित करने में वातावरण के कारकों अथवा सामाजिक कारकों का काफी महत्वपूर्ण योगदान होता है। ऐसे कारक निम्नलिखित हैं :-

(3) पारिवारिक वातावरण :- परिवार के द्वारा बच्चे सामाजिक आदर्शों तथा क्रियाकलापों को सीखते हैं। इसीलिए परिवार को प्रथम पाठशाला कहा गया है। इसके तहत मुख्यतः तीन तरह से समाजीकरण होते हैं :-

(A) माता-पिता का आपसी सम्बन्ध :- बच्चों के प्रथम शिक्षक उनके माता-पिता होते हैं। जब माँ बाप में आपसी सम्बन्ध अच्छा रहता है तो उनके बच्चों को उचित लाड़-प्यार तथा सहयोग मिलता है। यदि माँ-बाप आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं तो बच्चे जिद्दी, झगड़ालू एवं उदंड हो जाते हैं। हर्लॉक आदि का अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि माँ-बाप के अच्छे सम्बन्धों का प्रभाव बच्चों के Socialization पर अच्छा पड़ता है।

(B) माता-पिता तथा बच्चों का सम्बन्ध :- माँ बाप का बच्चों से कैसा सम्बन्ध है? इसका प्रभाव भी Socialization पर पड़ता है। ग्लूक्स ने अपने अध्ययन में पाया कि तीन-चौथाई अपराधी बच्चों का सम्बन्ध उनके माँ बाप से ठीक नहीं था।

(C) बच्चों का आपसी सम्बन्ध :- एक ही परिवार के कई बच्चों या भाई-बहनों में आपसी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण नहीं होता है तो Socialization प्रभावित हो जाता है। इसमें Birth order का भी प्रभाव पड़ता है। एडलर के अनुसार एक ही माँ बाप के सबसे बड़े बच्चे का संतुलित सामाजीकरण एवं विकास होता है, पर सबसे छोटे बच्चे लाड़ प्यार एवं सुरक्षा के कारण पिछड़ जाते हैं।

(4) पाठशाला का वातावरण :- समाजीकरण पर पाठशाला के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। पाठशाला में बच्चे अन्य बच्चों के सम्पर्क में आते हैं, उनका दायरा बढ़ता जाता है। Interaction का अधिक मौका मिलता है। इससे उनके सामाजीकरण की प्रक्रिया को गति मिलती है। शिक्षक के व्यक्तित्व एवं चरित्र का प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है। इसी तरह विद्यालय के वातावरण जैसे अनुशासन, खेलकूद शिक्षा आदि का गहरा प्रभाव बच्चों के Socialization पर पड़ता है। इसीलिए कहा जाता है :-

"The School transmits the social heritage to children and helps in shaping their social behaviour and personalities.

(5) आस पड़ोस एवं संगी साथी :- बच्चा जब कुछ बड़ा हो जाता है तो अपने समुदाय एवं आस पड़ोस के लोगों के साथ अन्तर्क्रिया करता है। अन्य बच्चों को मित्र बनाता है। इसके फलस्वरूप वह सामाजिक क्रिया कलापों में भाग लेता है। मूल्यों एवं नियमों को सीखता है जिसका गहरा असर उसके Socialization पर पड़ता है। अध्ययनों में देखा गया कि अपराधी-चरित्र वाले समुदाय के बच्चे भी अपराधी सीख जाते हैं।

(6) सामाजिक एवं आर्थिक हैसियत :- इसका बच्चों के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इससे बच्चों की पूर्वधारणा, मनोवृत्तियों, आदत एवं संवेगात्मक स्थिरता के विकास को बल मिलता है। यहाँ तक कि सोचने व्यवहार आदि भी प्रभावित होता है। बच्चों में हीनता या कुण्ठा के विकास में आर्थिक तथा सामाजिक हैसियत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः Socialization को प्रभावित करने में इनका हाथ होता है। इस संदर्भ में कई अध्ययन भारतीय परिवेश में भी कर गये हैं। शुक्ला एवं मिश्रा (1980) के अनुसार निम्नवर्ग की अपेक्षा उच्चवर्ग के बच्चों में बेहतर अभियोजन पाया जाता है। सारजू (1984) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च वर्ग के बच्चों में सृजनात्मकता अधिक पाई जाती है।

(7) खेल एवं खेल के साथी :- समाजीकरण को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक खेल के नियम एवं कायदे कानून होते हैं, जिसे खेल में भाग लेने वाले बच्चे सीखते हैं। उनमें खेल से सहकारिता, टीमभावना

प्रतियोगिता एवं सहानुभूति का विकास होता है। भाषा विकास नैतिक विकास में भी मदद मिलता है। दूसरी तरफ बुरे खेलों जुआ ताश, सट्टेबाजी आदि गलत चीजे सीखाते हैं।

⑧ भाषा एवं संस्कृति :- समाजीकरण पर भाषा एवं संस्कृति का भी प्रभाव पड़ता है। भाषा के माध्यम से हम अपनी भावनाओं का आदान प्रदान करते हैं। इससे सामाजिक क्रिया कलापों, मूल्यों, मानदण्डों को अपनाने में मदद मिलता है। कुशल समाजीकरण के लिए शुद्ध एवं विकसित भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। इसी तरह प्रत्येक संस्कृति की अपनी परम्पराएँ, लोकरीतियाँ एवं Norms होते हैं जो Socialization को सीखने में मदद करते हैं। शौरनफेल्ड के अनुसार "बच्चा एक कच्ची सामग्री (Row material) होता है जिसको संस्कृति अपने अनुकूल पक्के माल में बदल डालती है।" कुमारी मीड ने एरापेश एवं मुण्डुगोमर जनजातियों की तुलनात्मक अध्ययन करके बताया कि सांस्कृतिक भिन्नता के चलते एरापेश सहयोगी, एवं मिलनसार होते हैं, जबकि मुण्डुगोमर जनजाति के लोग झगड़ालू एवं आक्रामक होते हैं।" चटर्जी आदि (1972) में अपने अध्ययन में पाया कि शहरी बच्चों की तुलना में देहाती बच्चे अधिक धार्मिक तथा यौन पूर्वधारणा से ग्रस्त होते हैं।

इस प्रकार अब तक की विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि समाजीकरण एक जटिल सम्प्रत्यय है, जो अर्जित होती है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। इस प्रक्रिया पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है। इनमें परिवार, आस पड़ोस, विद्यालय खेल -कूद एवं सांस्कृतिक वातावरण समाजीकरण की प्रक्रिया को

को बहुत ही अधिक प्रभावित करते हैं, जबकि जेलखाना, चिकित्सा-लय आदि द्वारा de-Socialization एवं Resocialization होता है।

[signature] 23.09.2022